श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ बड़ा कयामतनामा ❖

खास उमत सों कहियो जाई, उठो मोमिनों कयामत[1] आई ।
केहेती हों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान ।।१।।

जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार ।
वसीयत नामे देवे साख, अग्यारें सदीं होसी बेबाक[2] ।।२।।

बरकत दुनियाँ और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान ।
ए दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान ।।३।।

और तिन दिन होसी अंधाधुंध, द्वार तोबा के होसी बंध ।
कह्या होसी और रवेस[3], तब कोई किसी का नाहीं खेस[4] ।।४।।

अब कहो जी बाकी क्या रह्या, निसान कयामत का जाहेर कह्या ।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस ।।५।।

१. महाप्रलय का दिन । २. चुकता हिसाब । ३. रिती-रिवाज । ४. सगे संबंधी ।

क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान ।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए विचार देखो दिल आन ।।६।।
नव सै नब्बे हुए वितीत, तब हजरत ईसा आए इत ।
सो लिख्या अग्यारहें सिपारे मांहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें ।।७।।
रूहअल्ला पेहेनें जामें दोए, ए लिख्या कुरान में सोई होए ।
ए लिख्या छठे सिपारे मांहें, धोखे वाला जाए देखे तांहें ।।८।।
ए जो बरस ईसा की कही, तिन की तफसीर कर देऊं सही ।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस ।।९।।
सत्तर बरस और जो रहे, सो तो पुल-सरात के कहे ।
मोमिन चलें बिजली की न्यात, मुतकी[1] भी घोड़े की भांत ।।१०।।
और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही ।
पुल-सरात कही खाँडे[2] की धार, गिरे कटे नहीं पावे पार ।।११।।
अमेतसालून में कह्या ए, ए जाए देखो दीदे दिल के ।
ए जाहेर कह्या बयान, पर दिल के अंधे न सके पेहेचान ।।१२।।
दसहीं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम ।
ए लिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम ।।१३।।
आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम ।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी ।।१४।।
अजाजीलें देख्या वजूद, तो आदम को न किया सजूद ।
सिजदे किए तिनें बेहद, सो सारे ही हुए रद ।।१५।।
जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुआर[3] ।
तब अजाजीलें मांग्या वचन, के आदम मेरा हुआ दुस्मन ।।१६।।
इनकी औलाद की मारों राह, सबके दिल पर होऊं पातसाह ।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारें में जाहेर कही ।।१७।।

१. ईश्वर सृष्टि । २. तलवार । ३. दुर्दशा ।

फेर तुम लेत वाही की अकल, पर क्या करो तुम जो वाही की नसल ।
तुम दज्जाल बाहेर ढूंढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत ॥१८॥
ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिल के कान ।
हमेसां आवत है ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों ॥१९॥
सब पैगंमर जहूद खिलके[१], विचार देखो दीदे दिल के ।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान ॥२०॥
तुम ढूंढ़ो अपने खिलके मांहें, तामें तो साहेब आया नाहें ।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात[२] ॥२१॥
रब ना रखे किसी का गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान ।
परदा लिख्या जो हजरत के रूए[३] पर, तिन की क्या तुमको नहीं खबर ॥२२॥
परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं मांहें, ए पढ़े इसारत समझत नाहें ।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर ॥२३॥
ऐसी हिंदुओं की कही सिफत, आखिर हिंदुओं में मुलक नबुवत ।
और आप हजरत[४] रिसालत-पनाह[५], जहूद फकीरों में पातसाह ॥२४॥
पांचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान ।
और हिंदवी किताबों में यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही ॥२५॥
सो आएके करसी एक रस, मसरक[६] मगरब[७] होसी बस ।
कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊं निबेर[८] ॥२६॥
ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी ना पाइए सुध ।
घोड़े को लिख्या कलंकी कर, ताकी किन को नहीं खबर ॥२७॥
जोतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजुग को करसी निकंद[९] ।
अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक ॥२८॥
जहूद कहें मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए ।
यों सारों ने रसम जुदी कर लई, सब बुजरकी धनी की कही ॥२९॥

१. जाति । २. सिफारिश करना । ३. चेहरा । ४. रसूल पैगंमर । ५. रक्षक । ६. पूर्व (हिंदू) । ७. पश्चिम (मुस्लिम) । ८. निर्णय । ९. नष्ट ।

ओ उरझे जुदे नाम धर, रब आलम का आया आखिर ।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब ॥३०॥
सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख ।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाए के दिए ॥३१॥
दोनों जहान में थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन ।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन ॥३२॥
ब्रह्मांड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप ।
ग्वाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे ॥३३॥
सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत ।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अर्स अजीम के द्वारे ॥३४॥
लैलत-कदर के तीन तकरार, तीसरे फजर में कार गुजार ।
रूहों फरिस्तों वजूद धरे, लैलत कदर के मांहें उतरे ॥३५॥
खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार ।
हुकम दिया साहेबें इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥३६॥
यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान ।
तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारैं सदी में देखो नजर ॥३७॥
और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी ।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए ॥३८॥
अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित ।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान ॥३९॥
हकुल्यकीन[१] और सुंनी[२] जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए ।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब ॥४०॥
भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसी को न देवे कोई ।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए ॥४१॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥४१॥

१. अटल विश्वास । २. सुनकर विश्वास लाने वाला ।

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम ।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहू की ना रही ।।१।।
तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर ।
सोए परोवनी मोतियों मांहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें ।।२।।
केहेलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान ।
ना कुरान ना आप चिन्हार, अहेल किताब यों कहावें दीनदार ।।३।।
जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर ।
ढांपे कुरान की रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई ।।४।।
दिल पर दुस्मन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलाम की राह ।
हुए हिरस हवा के बंदे, किए सैताने देखीते अंधे ।।५।।
सब अंगों बैठा दुस्मन जोर, दिल के दीदे[1] दिए फोर ।
दुस्मनें ना छोड़्या कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी दौर ।।६।।
उबरीं एक रूहें उमत, दूजी गिरो फरिस्तों की इत ।
जिनमें इमाम हुआ आखिरी, हिंदू फकीरों में पातसाही करी ।।७।।
देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबों का दिया भान ।
ल्याया नहीं जो आकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन ।।८।।
जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर ।
कराया सबों को सिजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा ।।९।।
खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई ।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही ।।१०।।
भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबों के किए यों सिध ।
कहे छत्ता जो पेहेले ल्यावे ईमान, खास उमत का सोई जान ।।११।।

।।प्रकरण।।२।।चौपाई।।५२।।

१. आंखें ।

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे।
कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर ॥१॥
जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान ॥२॥
तिन की तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन।
और इसलाम कहे दरवेस[1], कही खास उमत इन भेस ॥३॥
याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या मांहें अल्ला कलाम।
कोई कर ना सके भेव[2], जो महंमद को देवें फरेब ॥४॥
बीच आवें जाएँ सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर।
काफर होए सिताबी दूर, मोमिन साहेब के हजूर ॥५॥
सो काफर पड़े मांहें दोजख, आखिर को जो ल्यावे सक।
जो मोमिन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार ॥६॥
बीच आखिरत के बुजरकी, हुई है इस उमत की।
सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक ॥७॥
दूध सहत[3] की नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तले।
है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदा की मेहेरबानी ॥८॥
जहां बिध बिध की हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेब के हजूर ॥९॥
जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाए के।
और जाहेद[4] जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदार की कस्त ॥१०॥
जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार।
जो फुरमान के बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार ॥११॥
ए जो कही किताबें तीन, तिन पर है हक का आकीन।
सिफत जमाने पैगंमर, रखना बीच खुदाए का डर ॥१२॥

१. पुनीत आत्मा। २. भेद, रहस्य। ३. शहद। ४. संयमी।

अंजील तौरेत और कुरान, इन पर होए आया फुरमान ।
जो हवसेका[१] पातसाह, पाई इन किताबों से राह ।।१३।।
इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद ।
जो कहे दोस्त साहेब मोहोल, नजीक खुदाए के खासे फैल ।।१४।।
सब्द न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद ।
वास्ते नेकी आखिरत, कबूं न छोड़ें खास उमत ।।१५।।
अदा हुए सब फरज, तब सिर से छूट्या करज ।
खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी ।।१६।।
इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाए के हिसाब ।
सब बंदगी एही मोमिन, जो अंदर के मारे दुस्मन ।।१७।।
एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत ।
आप रखो पांउं उस्तुवार[२], मैदान लड़ाई हो हुसियार ।।१८।।
ए जो बैठा मांहें सबन, एही खुदाए का है दुस्मन ।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमिनों सों न चले जोर ।।१९।।
बाजे नजीक अर्ज़ निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज ।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाए का तुम राखो डर ।।२०।।
फुरमान बरदारी[३] ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए ।
जिनों कुरान की पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर ।।२१।।
नफसों से करो सबर[४], मारे हिरस हवा परहेज कर ।
दिल से दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर ।।२२।।
बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत ।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम ।।२३।।
दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक ।
लुत्फ[५] मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद[६] ।।२४।।

१. प्रमोधपुरी (जेल) । २. मजबूत । ३. आज्ञाकारी । ४. संतोष । ५. आनंद । ६. निषिद्ध एवं त्याज्य वस्तुएँ ।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब ।
पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब ॥२५॥
बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए ।
छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होउ बका पर ॥२६॥
ढांपे थे जो एते दिन, हनोज[१] लों न खोले किन ।
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल ॥२७॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥७९॥

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर ।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान ॥१॥
लागन[२] हिंदू मुसलमान, गजनवी महमूद सुलतान ।
ढ़ाए हिंदुओं के खाने बुत, दिल में इमाम की ज्यारत[३] ॥२॥
अपने जमाने था उस्तुवार, कुतब औलियों का सिरदार ।
बंदगी मांहें था बड़ा, सफ तलेकी रेहेता खड़ा ॥३॥
तलब द्वा फातियाओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर ।
फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही ॥४॥
इमामें कह्या यों कर, पेसकसी[४] ल्यावें हम घर ।
बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कई सेहेर बाजार ॥५॥
एक हजार सात से हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी ।
एती आए के पेसकसी करी, ओढ़ के पुरानी कमरी ॥६॥
आप होए के नंगे पाए, तले की सफ में खड़ा आए ।
आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बकसीस ॥७॥
कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ ।
दुनियां थें आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया ॥८॥

१. अभीतक । २. युद्ध । ३. दरसन । ४. नजराना ।

तो अजमंतिसा[१] में सही, गजनवी[२] को बकसीस भई ।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊं सबन ॥९॥
देऊं कुरान की साहेद, बिना फुरमान न काढ़ों सब्द ।
छठे सिपारे में एह सनंध, ईसा नुसखे का खावंद ॥१०॥
और साहेदी देऊं तीसरी, अहेल किताबें दिल में धरी ।
दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित ॥११॥
बरस नव सै नब्बे हुए जब, मोमिन गाजी आए तब ।
रूहअल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल ॥१२॥
बंदगी ए करसी कबूल, एक की हजार देवें इन सूल[३] ।
ए दूजा जामा ईसे का होए, बातून माएने पाइए सोए ॥१३॥
चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुसखा जहूर ।
नव सै नब्बे नव मास ऊपर, ए नुसखा लिया मिसल मातबर[४] ॥१४॥
असराफील इत बीच इमाम, ए नुसखे इलम की किताबें कलाम ।
एक रोज आए खाने किताब, कह्या पोहोंचाओ नुसखा सिताब ॥१५॥
महमूद गजनवी सुलतान, ओ नुसखा हासिल करे परवान ।
जब नुसखा उनने सही किया, पंद्रा रोज सामें आएके लिया ॥१६॥
तब अव्वल आखिर की मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान ।
और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुसखा करे विख्यात ॥१७॥
केतोंक अपना किया कुरबान, करें निछावर बुजरक जान ।
इत पांच सै जुलजुलाटहू[५], संग रसूल के असलू रूह ॥१८॥
ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत ।
गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुसखा हुआ साफ ॥१९॥
बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद ।
लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए ॥२०॥

१. एक आयत । २. गजनां का रहने वाला । ३. तरह । ४. विश्वसनीय (शिरोमणी) । ५. ब्रह्म आत्माएं ।

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात ।
हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहरबान ॥२१॥
ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही ।
इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम ॥२२॥
तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरान के पेहेले हो गए ।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक ॥२३॥
ए जो इमाम गजनवी का मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर ।
सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कह्या ॥२४॥
उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान ।
काजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर ॥२५॥
ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल ॥२६॥
॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥१०५॥

लिख्या मांहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर ।
आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान ॥१॥
महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊं पेहेचान ।
इन मुरग ने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल ॥२॥
तिन मुरगें झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर ।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार ॥३॥
कलाम अल्ला की तो एह नकल, देखो दुनियां की अकल ।
महंमद को करहीं औरों समान, इन दुनियां की ए पेहेचान ॥४॥
जो कहावें महंमद के बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदे के अंधे ।
कहावें जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमद को औरों समान ॥५॥
ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्ला की सुध न परी ।
पेहेले कही जो तुम दिल में आनी, तुम जो जानी मुसलमानी ॥६॥

पाले अरकान मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमिन ।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धर्‍या करज ।।७।।
और भी इनों मुसलमानी करी, सो भी देखो चलन जाहेरी ।
ए लानत लिखी मांहें फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान ।।८।।
सरीयत यों कहे इभराम, जिनों किए हैं बद फैल काम ।
जिनों अंगों लोप्या फुरमान, सो सारे किए नुकसान ।।९।।
इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों सुंनत बड़ी कर लई ।
जिन दई लानत[1] ऊपर तकसीर[2], सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर ।।१०।।
ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याही में कर लई मुसलमानी ।
लानत करी ऊपर की बानी, इनों सोई भली कर मानी ।।११।।
पढ़े आलम आरिफ कहावें, पर एक हरफ को अर्थ न पावें ।
मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें विचार ।।१२।।
तौरेत अंजील और जबूर, चौथी कलाम अल्ला जहूर ।
ए चारों उतरियां जिनों पर, सो चारों नाम कहे पैगंमर ।।१३।।
मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद ।
और आखिरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद ।।१४।।
मनसूख[3] तीन कही ता मिने, फुरकान एक यों भने[4] ।
समझे ना किताबों के तांई, क्या लिख्या है माएनों माहीं ।।१५।।
तौरेत लिखी ठौर बीसेक कही, सो जुदे जुदे नामों पर दई ।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल कयामत इन पर इसलाम ।।१६।।
अब को मनसूख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक ।
और भी तुमको कहूं हक, बिना पाए मगज न छूटे सक ।।१७।।
कुरान लिख्या दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और ।
अब को अव्वल को कलाम आखिरी, ए नीके तुम ढूंढ़ो जाहेरी ।।१८।।

१. फिटकार । २. गुनाह । ३. रद्द । ४. कहे ।

किस्से कुरान के डारो तित, रद जमाने हो गए जित ।
ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखिर ॥१९॥
लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे ।
ऊपर माएने ले देवे सैतान, जाको कहिए बेफुरमान ॥२०॥
जो कोई होसी बेफुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान ।
ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सोई जाहेरियों हिरदे में रखी ॥२१॥
अब और कहूं सो सुनो, महंमद को क्यों औरों में गिनो ।
गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान ॥२२॥
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार ।
सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफर ॥२३॥
उनों करी बेफुरमानी, ताथें गिरो सबों की रानी ।
अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत ॥२४॥
महंमद की जो उमत भई, दस विध दोजख तिनकों कही ।
यामें फिरके कहे बहत्तर, तामे एक मोमिन लिए अंदर ॥२५॥
कौन गिरो जो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही ।
वाही सूरत में कही पुलसरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात ॥२६॥
को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुलसरात की धार ।
खास गिरो साहेबें सराहीं, गिरो दूजी पीछे लगी आई ॥२७॥
और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजख को चलाई ।
ऐसे उलमा[1] सबही कहें, पर माएना बातून कोई न लहे ॥२८॥
अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरिफ ।
बिना मगज न महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ़्या कुरान ॥२९॥
बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान ।
एह वास्ता[2] पाइए तब, मगज माएनें खुलें जब ॥३०॥

१. विद्वान । २. कारन ।

खोल न सकें पढ़ें अल्ला कलाम, सो खोले उमी[1] सब मेहेर इमाम ।
अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी कयामत ।।३१।।
किन खोले न माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान ।
पढ़े आलम आरिफ कई जन, पर एक हरफ न खोल्या किन ।।३२।।
अब देऊं दरवाजे खोल, कहूं हकीकत बातून बोल ।
जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज कयामत ।।३३।।
साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम ।
खोले माएने बातून हकी, मोमिन जाहेर करों बुजरकी ।।३४।।
लिखे सब माएने बातन, सो हनोज[2] लों ना खोले किन ।
सब खूबियां हैं बातन, खुले मगज सबों भई रोसन ।।३५।।
अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम ।
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद ।।३६।।
रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी[3] ।।३७।।
आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला मांहें इमाम ।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए ।।३८।।
जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर ।
सतरहें सिपारे यों कर कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया ।।३९।।
और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे ।
सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही ।।४०।।
ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान ।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत ।।४१।।
कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला मांहें जहूर ।।४२।।

।।प्रकरण।।५।।चौपाई।।१४७।।

१. अनपढ़ । २. अभी तक । ३. पिलाने वाले ।

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम ।
इन में खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी ।।१।।
सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम ।
कही खास उमत महंमद, जाकी सिफत को न पोहोंचे सब्द ।।२।।
सोई कहूंगी जो लिख्या कुरान, सब्द न काढूं बिना फुरमान ।
या तो कहूं महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस ।।३।।
दे साहेदी कहूंगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक ।
अब लों जाहेर थी सरीयत, खोले माएने बातून हकीकत ।।४।।
अब सबमें जाहेर हुई कयामत, खुले कलाम जब पोहोंची सरत ।
लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने ।।५।।
ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान ।
जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी अक्सा मसजिद ।।६।।
और लिख्या मेयराजनामें माहीं, जब हुआ मेयराज रसूल के तांई ।
रसूल चले पांउं सिर दे, संग एक जबराईल ले ।।७।।
चौदे तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही ।
निराकार कहिए सुंन, एही बेचून[1] बेचगून[2] ।।८।।
छोड़ याको आगे को गए, नूर बनमें दाखिल भए ।
जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और ।।९।।
आगे चल न सक्या क्योंहीं कर, नूर तजल्ली जलावे पर ।
तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही विवेक ।।१०।।
लिख्या दरिया मीठा मिश्री से पाक, तित कह्या मुरग चोंच में खाक ।
गिरो फरिस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर खिलकत ।।११।।
और कह्या देख दाहिंनी तरफ, मोतिन के मुंह पर कुलफ[3] ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों किया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया ।।१२।।

१. अनुपम । २. निर्गुन । ३. फरामोशी का ताला ।

इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल ।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब ॥१३॥
और कई बातें खुदाए से करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी ।
तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियाँ में तुम ॥१४॥
और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार ।
बाकी रहे जो तीस हजार, आखिर इन पर है मुद्दार ॥१५॥
सो कयामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान ।
अमेत सालून में एह बात, बिध बिध कर लिखी विख्यात ॥१६॥
रूहें कही बारे हजार, बुजरकी को नहीं सुमार ।
जिनकी इच्छासों फरिस्ता होए, बड़ा सबन का कहिए सोए ॥१७॥
सो रूहें दरगाह के मांहें, ऐसा नजीकी और कोई नाहें ।
सो ए रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल ॥१८॥
और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंद से उतारे ।
काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियां में विस्तरे ॥१९॥
और जो अंधेरी से पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे ।
फिरे मन के फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर ॥२०॥
और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होए न्यारे ।
फरिस्ते उतरे वास्ते कुरान, फरिस्तों पर आया फुरमान ॥२१॥
फौज फरिस्तों की भरी नूर, असराफील बजावे सूर ।
और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान ॥२२॥
फरिस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनी का हक ।
उतरे लैलत कदर के मांहें, तीन तकरार रात के जाहें ॥२३॥
रूहों फरिस्तों वजूद धरे, जोस धनी का ले उतरे ।
रात नूर भरी कही ए, जित रूहअल्ला के तन जो कहे ॥२४॥

एक तकरार हूद के घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर ।
तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फरिस्ते पैगंमर ॥२५॥
खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार ।
हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥२६॥
आखिर मिलावा साहेब इत, रूहें फरिस्ते पैगंमर जित ।
याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित ॥२७॥
तीन सरूप खुदाए के कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे ।
एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर ॥२८॥
दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर ।
पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज मांहें अंकूर ॥२९॥
वजूद आदम का जैसा खाक, पांच पचीसों इनके पाक ।
आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान ॥३०॥
एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील ।
न करे सिजदा ऊपर आखिरी आदम, फेरया जाहेर कलाम अल्ला का हुकम ॥३१॥
मांहें गया सबन को खाए, पढ़े ढूंढ़त जुदा[१] ताए ।
जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए ॥३२॥
दाभ तूल-अर्ज माएने बातन, मुख आदम का गधी तन ।
बातून माएने कही कयामत, देखसी खुले हकीकत ॥३३॥
दज्जाल एक आंख जाहेरी, कई बिध तिनकों लानत करी ।
नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी ॥३४॥
खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुस्मन जोरावर[२] ।
पातसाही करे सबों के दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर ॥३५॥
दुस्मन राह मारे इन हाल, भूले देखें बाहेर दज्जाल[३] ।
छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर ॥३६॥

१. शरीर से बाहर । २. शक्तिशाली । ३. शैतान (अबलिस) ।

करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस ।
साहेबी उमत की साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ्यो जस ॥३७॥
अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें विस्तरी ।
दुनियां दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन भेख ताए ॥३८॥
कह्यो न जाए धनी को विलास, पूरी साथ सकल की आस ।
लीला विनोद करसी हाँस, ए सुख उमत लेसी खास ॥३९॥
ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम बास ।
इस्क न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास ॥४०॥
जाए पड़े प्रेम के फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस ।
पीछे तीसों नूर बरसात, तिन आगूं आवसी पुल-सरात ॥४१॥
सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए ।
अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल ॥४२॥
आगे असराफीलें कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए ।
नूर नजर तले हुए सुध, आए मांहें जाग्रत बुध ॥४३॥
नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए ॥४४॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥१९१॥

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां ।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां ॥१॥
कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर ।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कह्या अल्ला कलाम ॥२॥
रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दई ताम ।
मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम ॥३॥
ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत ।
या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द ॥४॥

बावन मसले जो कहे अरकान, जो बजाए ल्यावे मुसलमान ।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन ।।५।।
ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत ।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई कयामत ।।६।।
और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तुमें ।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखिर को आए धनी ।।७।।
सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत ।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदों के घर ।।८।।
ज्यों अव्वल त्योंहीं आखिर, सोभा सारी महंमद पर ।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरान में एही खबर ।।९।।
लोक ढूंढ़ें मांहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान ।
अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही ।।१०।।
हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम ।
जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरान से किए दूर ।।११।।
याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध विवेक ।
कलाम अल्लाएँ ऐसी कही, आलम[1] आरिफ[2] की हुज्जत ना रही ।।१२।।
और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारे में एह बयान ।
इनका जित खुल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो विचार ।।१३।।
ए महंमद पर दिया खिताब, माएने खोले सब किताब ।
सो माएने रूजू[3] उमतसें होए, खासी उमत कहिए सोए ।।१४।।
महंमद की इनपे पेहेचान, भली भांत समझें कुरान ।
जैसे पेहेचानने का हक, इन उमत को नहीं कोई सक ।।१५।।
जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत ।
मांहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस[4] ।।१६।।

१. विद्वान । २. ब्रह्मज्ञानी । ३. स्वीकार करते हुए प्रसार करना । ४. स्पर्धा - बराबरी ।

आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर ।
जो गिरो बनी असराईल की भई, सो औलाद याकूब की कही ॥१७॥
हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म[1] हुआ अहमद ।
संग रोसन तौरेत कुरान, सो रान्या[2] जाए न हुई पेहेचान ॥१८॥
भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत ।
इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक ॥१९॥
उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर ।
ए सुन वाका[3] जो न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान ॥२०॥
महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान ।
जो तौहीद का कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे ॥२१॥
जो होए इस्क आकीन साबित, तोभी झूठी ए सरीकत ।
सिरे न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या मांहें अल्ला कलाम ॥२२॥
सिपारे तीसरे में कही, पांच वज्हे[4] की पैदास भई ।
दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन ॥२३॥
एक सरूप कह्या एक हाथ, दो हाथ सरूप मिले दो साथ ।
रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम ॥२४॥
एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही ।
दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलायक मुतकी नूर ठौर ॥२५॥
तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध ।
नूह नबी के बेटे तीन, तिन में स्याम सलाम अमीन ॥२६॥
मुस्लिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए ।
ए तीनों मिल दुनी रची और, सो तीनों आए जुदे जुदे ठौर ॥२७॥
चांद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बड़ो जस ।
चांद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए ॥२८॥

१. नाम । २. रद्द । ३. वचन । ४. प्रकार ।

पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए ।
हिसाम चांद कह्या हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिन्दुओं साहेब जान ॥२९॥
याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान ।
आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन ॥३०॥
तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आंखें खोल ।
नूह का बेटा बुजरक स्याम, जाको दोनों जहान में रोसन नाम ॥३१॥
स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबकों न पाइए सोए ।
एक देवे अल्ला की ग्वाही, दूजी करे बयान हुकम चलाई ॥३२॥
पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन ।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए ॥३३॥
तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब ।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली ॥३४॥
जलती सब पैगंमरों पे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें ना भई ।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर ॥३५॥
सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब ।
सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई ॥३६॥
सबों को सुख महंमदे दिए, भिस्त में नूर नजर तले लिए ।
कहे छत्ता अपनायत[१] कर, जिन कोई भूलो ए अवसर ॥३७॥
हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप ॥३८॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥२२९॥

लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत ।
मोमिनों का लिख्या मजकूर, सो ए कहूं सब देखो जहूर ॥१॥
पाई खलासी मोमिन, हुआ मकसूद सबन ।
ऐसे होवे जो कोई, सांची बंदगी में सोई ॥२॥

१. अपना जान कर ।

रखो खुदाए का डर, बंदे सिजदे पर नजर।
किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर ।।३।।
पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत।
ऊपर से आयत आई, तब नजर आसमान से फिराई ।।४।।
किया सिजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन।
यों कह्या बीच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब ।।५।।
जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर।
ए सिजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए ।।६।।
जब ए हुई खुसाली, तब भूले सिजदे खाली।
निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाएँ बाएँ नजर ।।७।।
हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम।
हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल ।।८।।
सिर से छूट गया करज, हुए मोमिन बेगरज।
छूटा मूल जो हुकम, हुआ सिजदा हजूर कदम ।।९।।
सो ए करता हों मैं तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर।
पेहेले था बेहेरूल्हैवान[१], तब तो तिन में था फुरमान ।।१०।।
अब दरिया हुआ हक, इन में न रहे किसी की सक।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर ।।११।।
सुरत दाएँ बाएँ भान, सिर आगूं धरिया आन।
खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर ।।१२।।
हुआ साहेब सों परस, दिल से छूटी हवा हिरस।
भेद पाया सिरर[२] हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक ।।१३।।
सो ए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान।
एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई ।।१४।।

१. पशुवृत्ति का सागर। २. रहस्य।

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिरताज ।
मिले वाही के तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब ॥१५॥
जब तें एह आसा मेटी, तब तो तूं साहेब सों भेंटी ।
जो लों कबू देखे आप, तो लों साहेब सो नहीं मिलाप ॥१६॥
जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे ।
तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा ॥१७॥
दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक ।
या हँस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए ॥१८॥
जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए ।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्सेसों कहे सोई ॥१९॥
केहेत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आयत करी ।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहे बेसक ॥२०॥
और जो कोई साहेब सों फिरे, काम दुनी का दिल में धरे ।
याही में पावे आराम, सोए रहे छल बाजी काम ॥२१॥
साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल ।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक ॥२२॥
देना है ठौर बुजरक, आप सदका[१] देना बलक ।
छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार ॥२३॥
ऐसी गिरो जो दरगाही, ताए रखना आप दृढ़ाई ।
जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नाहीं तिन काम ॥२४॥
या अपना या बिराना[२], सब परहेज किया दिल माना ।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेब के बिकानी ॥२५॥
दाहिनी तरफ जो है हक, ए लड़कियां तिन की मिलक ।
निगाह रखे जानें सुपना, इंद्रियों से आप अपना ॥२६॥

१. कुरबानी । २. दूसरा ।

इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर ।
इन भांत की जो है औरत, तिन पाया रोज सरत ॥२७॥
और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बेकाम ।
और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम ॥२८॥
जो ए काम ढूंढ़े बदफैल, काफर चाहे उलटी गैल ।
ऐसे जो हैं सितमगार[१], पाया न समया हुए खुआर[२] ॥२९॥
और जो कोई पाक गिरो आकीन, किया अमानत बीच अमीन ।
इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत ॥३०॥
ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक ।
याही बीच निमाज असल, रखे आपा कर गुसल ॥३१॥
इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक ।
निगाह रखे खड़ा रहे आप, सूरत आयत करे मिलाप ॥३२॥
कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे ।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत ॥३३॥
मूलथें बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई[३] आखिर ।
ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान ॥३४॥
बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक ।
गिरो मोमिन जमे करें, छे सिफतें वारसी धरें ॥३५॥
और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम ।
जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास[४] अल्ला नजीक ॥३६॥
जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई ।
लई औरों भिस्त मीरास, जो रहे मोमिन बीच विलास ॥३७॥
बिना मोमिन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर ।
और काफर दोजख में जल, देखें भिस्ती मरें जल ॥३८॥

१. जुलमी । २. बरबाद । ३. गुन, अंग, इंद्रिया । ४. तरीका ।

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवे सुख ।
यों कह्या बीच मिसल जादिल, पावे ईमान बीच मिसल ।।३९।।
जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख मांहें काफर ।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ।।४०।।
ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस ।
इन आदम की पैदास, किया बीच खलक के खास ।।४१।।
खैंच किया सबों के आगे, मोमिन इनपे पेसवा[1] लागे ।
बीज मिट्टी दुनियां की न्यात, पर ए पाक साफ कही जात ।।४२।।
एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल ।
आया इन तरफ बहार, जिनों पकड़्या पाक करार ।।४३।।
नूस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तुवार[2] ।
तीन सरूप की एह बयान, सो ए कहे एक के दरम्यान ।।४४।।
सिफत तीनों की जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई ।
ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी ।।४५।।
न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजों सों इसारत करी ।
एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन ।।४६।।
तीन सरूप चढ़ती उतपनी, चढ़ती चढ़ती कही रोसनी ।
खोली राह आखिर बाग की, तंग सेती पोहोंचे बुजरकी ।।४७।।
बिध बिध की न्यामत पोहोंचाई, और कई तरबियत[3] फुरमाई ।
लड़के सेती पोहोंचे ज्वान, रख्या कदम हक बयान ।।४८।।
पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक ।
लायक खुदाए के करी सिफत, पैदा किया अर्स दोस्त ।।४९।।
कुरसी फिरस्ते लोहकलमी[4], कायम सितारों आसमान जिमी ।
पीछे आदम के पैदा भया, जात पाक से दोस्त कह्या ।।५०।।

१. आगेवान । २. मजबूत । ३. खुलासा - सिखापन । ४. परमात्मा की कलम से लिखी बात ।

बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बकसीस बड़ाई ।
मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत ॥५१॥
जो कह्या इन सेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर ।
इनका रंग है तकव्वल[१], सिर बिलंदी ताज सकल ॥५२॥
और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरकी का गले में तोक[२] ।
ए बकसीस और से रोसन, उन सुने गैब के सुकन ॥५३॥
एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई ।
ए तीनों सिफतों भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल ॥५४॥
इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए ।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे ॥५५॥
बाजे कहे साहेब इस्क, सबसे जुदा ए आदम हक ।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान ॥५६॥
हद सबोंकी करी जुबांन, क्या कोई कहे ए सिफत जहान ।
अब कहूं मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात ॥५७॥
सो अफताली[३] महंमद का भया, जो आदम ऐसा बुजरक कह्या ।
ए पैदा हुआ कारन महंमद, एह रसूल की कही हद ॥५८॥
जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए ।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इन में देख ॥५९॥
ईसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम ।
और जो कहे मुरदों की भांत, साकी प्याले होसी कल्पांत ॥६०॥
सो सारे फना आखिर, जेती वस्त कही जाहेर ।
जिन माएने लिए ऊपर, सो ए वजूद को रहे पकर ॥६१॥
जाहेर जिनकी भई नजर, कयामत बदला कह्या तिन पर ।
करे जिमीन सात आसमान, वास्ते उमत महंमद दरम्यान ॥६२॥

१. ईश्वरीय विश्वास । २. फंदा । ३. खिताब - उपाधि ।

सात हजार राह फरिस्ते, करी इसारत दुनी कयामते ।
अब खुदाए ने यों कर कह्या, मैं आसमान जिमी से जुदा रह्या ॥६३॥
जेती कोई पैदाइस कुंन, मोको तिन थें जानो भिंन ।
मैं ना इन में ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग ॥६४॥
मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरों में नाहीं आप ।
मैं इनों सों नहीं गाफिल[1], ए दुख सुख में रहे मिल ॥६५॥
सिरक[2] इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं ।
ऊपर से उतरया पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी ॥६६॥
मरतबा इनों देऊं उस्तुवार, इन पानी से होए करार ।
इबन अबास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान ॥६७॥
पांच नेहेरें जबराईल पर, आइयां भिस्त से उतर ।
पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावे और ॥६८॥
उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच में ।
हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर ॥६९॥
ए मेला हुआ आखिर दिन, तब नफा मसलहत[2] पाया सबन ।
दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई ॥७०॥
चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें कायम पानी भरे ।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी ॥७१॥
उतरया पानी ऊपर ले जाए, सब कर सके जो कछू ए चाहे ।
इन वीरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप ॥७२॥
इन समें उतरया आजूज, और संग इनके माजूज ।
पीछे उतरया जबराईल, लेवे सबको न करे ढील ॥७३॥
एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर ।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम ॥७४॥

१. बेखबर । २. हकीकत ।

पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहेवे किन ।
एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठाए के लिए ॥७५॥

ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियां भई जिंदगानी ।
बागोंने[१] ताजगियां[२] पाई, सो भी पानी हादी ने पिलाई ॥७६॥

सो भी कहे भिस्त के बाग, जिनसे खेती पायो सोहाग ।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर ॥७७॥

उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर ।
मलकूती को खेती कही, इनको बड़ाई उनथें भई ॥७८॥

दोऊ कायम भई उमत, उठे बीच हादी कयामत ।
तीसरी कायम भई दुनियां और, तिन सबों की हज[३] इन ठौर ॥७९॥

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासिल आई ।
एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर ॥८०॥
हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर ॥८१॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥३१०॥

लिख्या सिपारे सूरतों, और आयतें देखो जाए ।
कयामत कलाम अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए ॥१॥

अब लों तारीख आखिर की, न पाई कुरानथें किन ।
सो रूहअल्ला के इलम से, जाहेर हुई सबन ॥२॥

सबों सिपारों कयामत, एही लिख्या है मजकूर ।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर ॥३॥

आगूं नव सदीय के, कह्या होसी रूहों मिलाप ।
बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप ॥४॥

बाकी दसमी सदीय के, सवा नव साल रहे ।
गाजी मिसल मोमिन की, रूहअल्ला उतरे कहे ॥५॥

१. अतृप्त आत्माएं । २. अमरज्ञान से तृप्ति । ३. तीर्थ यात्रा ।

रूहअल्ला रोसन ज्यादा कह्या, दूजा अपना नाम ।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम ।।६।।
बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजलें भई जित ।
हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरान में तित ।।७।।
एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए भए तिन ।
मुद्दतें एक जुदा हुआ, साल सतानवें पोहोंचे इन ।।८।।
किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत ।
महीनें आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत ।।९।।
पांच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई ।
ए साल निन्यानवें लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई ।।१०।।
लकब[१] इद्रीस जान्या गया, सौ साल की मजल ।
जित तीस वरक[२] खुदाए के, हुए थे नाजल[३] ।।११।।
टोना[४] कह्या महंमद पर, अग्यारे गांठ लगाए ।
वह गांठें छूटे बिना, काहू ना सकें जगाए ।।१२।।
दस पर एक सदी भई, छूट गई गांठें सब ।
आमर[५] महंमद आखिर हुई, ठौर पोहोंचे मोमिन सब ।।१३।।
दस और दोए बुरज[६] कहे, वह बारहीं सदी कयामत ।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरक इन सरत ।।१४।।
दसमी से दोए भए, सो हादी दोए बुजरक ।
आखिर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक ।।१५।।
इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर ।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर ।।१६।।
इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब ।
पुल-सरात[७] सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब ।।१७।।

१. उपाधि । २. पृष्ठ । ३. अवतरित । ४. जादू । ५. हुकम । ६. नक्षत्र । ७. सरियत का रास्ता ।

पीछे तेरहीं में उठ खड़े, सुख कायम पोहोंचे सब ।
आठों भिस्त विवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब ॥१८॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥३२८॥

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी ।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत ॥१॥
केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे ।
कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर ॥२॥
हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने[1] कुफरान ।
अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे ॥३॥
काफर दिल में कीना[1] आनें, अंजील तौरेत पर मारे ताने ।
जो खुदाए का पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर ॥४॥
जुबां आकीन कयामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आनें ।
उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर ॥५॥
मुनकर हुकम और कयामत, हुए नाहीं नेक बखत ।
फंद मांहें हुए गिरफ्तार, भमर हलाकी[2] पड़े कुफार ॥६॥
उस्तुवार[3] न पाई सुंनत, ए जो हुए बदबखत ।
सुपेत मुंह कहे मोमिन, पाई राह जमात से तिन ॥७॥
नव सदी के आगे रोसन, कह्या होसी भिस्त का दिन ।
अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत ॥८॥
रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप ।
होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार ॥९॥
ए हमेसां हैं भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके ।
सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाए की राह पर करी है कस्त[4] ॥१०॥

१. द्वेष । २. तबाही । ३. दृढ़ता । ४. मेहनत ।

जो गुजरया बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत ।
ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे महंमद ॥११॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥३३९॥

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप ।
कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर ॥१॥
ए लिख्या वास्ते सबब[1] इन, बदले नेक खूब कारन ।
बीच राह हक के एक, तिन नेकों का बदला नेक ॥२॥
उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब[2] लेना है तित ।
बोहोतायत बीच यों नबिएँ, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए ॥३॥
तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए ।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक ॥४॥
नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस ।
तिनसे दूसरा होए मकबूल[3], सो ए बंदगियां करे कबूल ॥५॥
सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे ।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर ॥६॥
खिलाफ राह चलें काफर, दुनियां को देखावें डर ।
ए जो सरत कही इस दिन, उस बखत उतरे मोमिन ॥७॥
होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमिन करें कस्त ।
कस्त करें सब आरब, ए आयत उतरी हैं तब ॥८॥
ना रवा[4] मोमिन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़ने को जाएँ ।
होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए ॥९॥
जब पोहोंचे एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत ।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन की सों मुराद[5] किबला[6] ॥१०॥
जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड़ न जाए लड़ाई काम ।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे ॥११॥

१. कारण । २. पुण्य । ३. स्वीकृत । ४. अनुचित (वर्जित) वस्तुएँ । ५. आशय । ६. पूज्य स्थान ।

जो कोई गाम के हैं, तिनको इलम दीन का कहे ।
सवा नव बरस दसमी के बाकी, इतथें मजकूर भई है ताकी ॥१२॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥३५१॥

कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेड़ से केहेनी ।
मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार ॥१॥
ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप विसेक ।
सब नामों बुजरकी लिखी जित, मगज खुलें सब देखोगे तित ॥२॥
ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल ।
ए इलम ले रूहअल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया ॥३॥
दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस ।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम ॥४॥
कहों कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊं आड़ा अंतर ।
उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी ॥५॥
बुनियाद[1] रसूल सोई आखिरी, ए सिफत सारी इनकी करी ।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरूद करे हुसियार ॥६॥
एक से इसारत दूसरे, बिलंद[2] अस्थाने खुसखबरे ।
इन देहरी[3] की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक ॥७॥
आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी ।
मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही ॥८॥
उतपन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत ।
बड़े साहेब की ए पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई ॥९॥
जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन ।
मोती कह्या डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक ॥१०॥

१. नींव । २. ऊंचे, बड़ा । ३. चौखट ।

दबदबे[1] का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर ।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हादी से होए पेहेचान ॥११॥
सिरदार अस्वार इज्जत मैदान, आली सेर इन दरगाह का जान ।
इन पातसाह ऐसा जमाना, बकसीस चाहे बखत की पना ॥१२॥
इन गुलजारी[2] की खुसबोए, रोसन होवे दिल रूह दोए ।
सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन ॥१३॥
चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत ।
जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील ॥१४॥
रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर ।
ए इमाम की सब कही सिफत, मोमिन मुतकी दोऊ साथें उमत ॥१५॥
ढूंढेंगे हरघड़ी मरतबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा ।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान ॥१६॥
इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार ।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरकी पावे इत ॥१७॥
सब रोसनाई तमामियत, पाई बुजरकी कर कर कस्त ।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब ॥१८॥
जवेर बयान तोहफे[3] हुकम, चार जिलदों पर दई खसम ।
तलब पाकी की पकड़ी, तरतीब[4] तमामियत[5] पाई बड़ी ॥१९॥
पेहेली जिलद तमामियत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत ।
कबूलियत पाई है जित, बोहोत साथ मिलावत ॥२०॥
लिखना बाकी जिलद का है, सो तले तरजुमें लिखना कहे ।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर ॥२१॥
पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम[6] थे तिन पाया हक ।
इत थें बरस सत्तानवें, तित दूजे जामें जाहेर भए ॥२२॥

१. रोब । २. फुलों की वर्षा करने वाली (सुगंधित श्रीमुख वाणी) । ३. उपहार । ४. शिक्षा । ५. पूर्णता ।
६. नजदीकी (ब्रह्मात्माओ ने) ।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत ।
आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर[1] ।।२३।।
ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई ।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान ।।२४।।
ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई ।
आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों मैं हकीकत ।।२५।।
।।प्रकरण।।१२।।चौपाई।।३७६।।

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही ।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए ।।१।।
न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे ।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल ।।२।।
तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इन में आई ।
भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन ।।३।।
तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर ।
पीछे मेरे मोहीम[2] खैरात[3], जो वर पाए करे दीन की बात ।।४।।
पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत ।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा[4] इस बखत ।।५।।
ना जनने वाली मेरी औरत, अठानवे बरस की मजल है इत ।
और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर ।।६।।
फरजंद[5] मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए ।
लेवे मीरास[6] इमामत, लेवे मुझ से हकीकत ।।७।।
एह मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत ।।८।।
।।प्रकरण।।१३।।चौपाई।।३८४।।

१. प्राप्त । २. अखंड ज्ञान रूपी संपत्ति । ३. दान । ४. अग्रणीय (अगुआ) । ५. लड़का । ६. उत्तराधिकार ।

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक ।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर ।।१।।
ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सो जुदे कर देऊं खीर और नीर ।
एही अगली फेर और बिध लिखी, सोई समझी चाहिए दिल में रखी ।।२।।
भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिच्छा[1] महंमद फकीर ।
खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कह्या ।।३।।
ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कही हुरम[2] ।
कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया ।।४।।
जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या ।
इन बिध केती कहूं जंजीर, कुरान कई भांतों तफसीर ।।५।।
हादिएँ इनको ऐसा किया, फरजंद[3] मेरे मुद्दा लिया ।
हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे ।।६।।
अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक ।
पीछे इस के सिजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर ।।७।।
करम खुदाए का साहेब सिजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वायदे ।
इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे ।।८।।
खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या ।
ए बेटा तुझे बकसिया, कह्या नाम उसका एहिया ।।९।।
पैदा किया एहिया को देख, आगूं वह मैं नाम एक ।
बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल ।।१०।।
आगूं इस के ऐसा नहीं नाम, ना माफक इस के कोई काम ।
बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इस्म[4] ।।११।।
बल्कि[5] एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक ।
ना कछू मेहेतारी ने पाले, बाप के ना हुए हवाले ।।१२।।

१. शिक्षा । २. पत्नी । ३. लड़का (पुत्र) । ४. नाम । ५. अन्यथा ।

इमाम सालवी नकल आई, आगूं इस थें नकल फुरमाई ।
पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जहूरके ल्यावे ॥१३॥
पीछे उसके एते नाम लेवे, खासों में खासगी देवे ।
भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तुवार ॥१४॥
आखिर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कह्या मेहेमूद ।
आखिर बुजरकी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही ॥१५॥
इस्म धरे का माएना एह, ऐसी सबी कोई और न देह ।
ए तिस वास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया ॥१६॥
हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे ।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली ॥१७॥
अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरकी पाइए इनसेती ।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर ॥१८॥
मोहे गरीबी और नातवान[१], ए बड़ाई आप सों हुई पेहेचान ।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए ॥१९॥
कहे फरिस्ते खुदा के हुकम, ए जिकरिया कह्या जो तुम ।
ए बात यों ही कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे ॥२०॥
ए तेरे खुदाए ने कह्या, पैदा करने काम फरजंद का भया ।
कह्या बीच इस सिनसे[२], आसान खुदा के दो सकसों से ॥२१॥
तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूदसेंती बूद में लिया ।
बुजरकी सों खुदाए ने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही ॥२२॥
खुसखबरी सों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजूद इन हाल ।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे ॥२३॥
कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे ।
मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह ॥२४॥

१. कमजोर । २. आयु ।

कह्या खुदाए ने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी ।
मरदों से बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन ॥२५॥
ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन[1] वीर ।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजर का खबरदार ॥२६॥
ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी ॥२७॥

।।प्रकरण।।१४।।चौपाई।।४११।।

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद ।
बड़ी द्वा मांहें छिपके ल्याए, सब गिरोह सों करे छिपाए ।।१।।
बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम ।
बरस निन्यानवे कही हुरम[2], साथ ईसा के समझियो मरम[3] ।।२।।
सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही ।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे ।।३।।
पाँच जिल्दें इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई ।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार ।।४।।
आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर ।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामें की कहूं बात ।।५।।
कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार ।
खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर ।।६।।
कह्या होवे वजूद तमाम, इन सें भली भांत होवे काम ।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत ।।७।।
अंदर ज्वानी है रोसन, काह[4] ज्यों पकड़े अगिन ।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल ।।८।।

।।प्रकरण।।१५।।चौपाई।।४१९।।

१. अधिक चतुर । २. अंतःपुर । ३. भेद - रहस्य । ४. सूखी लकड़ी ।

ए जंजीर सिपारे सोलमें मांहें, बरस सौ की मजल है जांहें ।
याद किया मांहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान ।।१।।
बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था ।
अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब[१] कह्या इस ठाम ।।२।।
ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन ।
अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम ।।३।।
तीस वरक[२] हुए नाजल[३], ऊपर जामें कहे असल ।
बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदम के सौ बरीस[४] ।।४।।
तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक ।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेयराज भिस्त पेहेचान ।।५।।
पैगंमर की दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत ।।६।।

।।प्रकरण।।१६।।चौपाई।।४२५।।

कह्या आम सिपारे मांहें, अग्यारै सदी लिखी है जांहें ।
हुकम हादी के खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर कयामत ।।१।।
दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बाँध्या सरत एती ।
नाम हजरत के सेहर[५] कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई ।।२।।
रस्सी रखी कूएं के मांहें, ऊपर पत्थर दिया तांहें ।
जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कूएं गया उतर ।।३।।
अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारैं सदी हुई नजर ।
अग्यारे आयत आई तत्पर, भेजी खुदा ने जबराईल खबर ।।४।।
इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आयत हर गिरह खुल गई ।
उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आयत आई सकल ।।५।।
वास्ते रद करने को सेहर, खुली गांठें छूटे पैगंमर ।
इन से पनाह पकड़ी मैं, सो तिन की फजर करी हैं जिने ।।६।।

१. उपाधि । २. पृष्ठ, पना । ३. अवतरित । ४. वर्ष । ५. जादू ।

फलक चीज केहेते हैं हक, हुआ चाहिए दोऊ देखो विवेक ।
महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास ॥७॥
पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास ॥८॥
॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥४३३॥

सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए[१] सूरत रोसन ।
खास उमत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान ॥१॥
सौगंद खाई बीच होनें फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर ।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम ॥२॥
पेहेला रोज कौल हुरमत[२], सो हादी देखावे रोज कयामत ।
जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिल्हज थें खुली नजर ॥३॥
ए पेहेले दिन की कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात ।
इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी विख्यात ॥४॥
दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी[३] मस्कीनों[४] को देखाई वस्त ।
कह्या अरफे का अगला दिन, वास्ते अग्यारहीं ईद रोसन ॥५॥
पढ़ना द्वा[५] वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का हुआ इत ।
पाक होवे सबों का दम, तब जाहेर हुई ईद खसम ॥६॥
पेहेला रोज कयामत बयान, सो हजार बरस की इसारत जान ।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमी से दूजी अग्यारहीं मिली ॥७॥
दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालें मिलाइयां बीच कही ।
कलीम अल्ला[६] रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमी में ऊग्या दिनें ॥८॥
रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही ।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्ला सों मिल ॥९॥
बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन ।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान ॥१०॥
॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥४४३॥

१. मक्का में अवतरित अध्याय । २. इज्जत । ३. तीर्थ यात्री मोमिन । ४. गरीब । ५. प्रार्थना ।
६. अल्लाह से बातें करने वाला ।

साखी- तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन ।
रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन ।।१।।
याद करो खुदाए के तांईं, तकबीर[१] कहों दिन गिने हैं जांहीं ।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक ।।२।।
नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई ।
अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन ।।३।।
सुबह सेती अरफे का दिन, आखिर तांईं असर इन ।
बांधी उमेद बड़ी आगूं आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन ।।४।।
इन मसलें साफई इमाम, माफक दूजे साहेब का नाम ।
सिताबी[२] फिरे जो कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई ।।५।।
अग्यारहीं बारहीं जिल्हज करे, सो गुनाह कछू ना धरे ।
बाजे हैं जाहिल[३] आरब, बातें करें सिताबी तब ।।६।।
गिरोह एक बखत आखिर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर ।
सिताबी होवे रूखसद[४], तुझ पर गुनाह नाहीं कद ।।७।।
और कोई ढील करे जो तांहीं, तीन रात रहे मजल माहीं ।
तिनको कछुए नहीं आजार[५], तेहेकीक यों ही है निरधार ।।८।।
इन में जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज गुनाह से डरे ।
जो कोई खतरों से फिर्या होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए ।।९।।
बाकी जेती रही उमर, तिन में रखे खुदाए का डर ।
कयामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर ।।१०।।

।।प्रकरण।।१९।।चौपाई।।४५३।।

१. विवरण । २. जल्दी । ३. अज्ञानी । ४. विदा । ५. मुसीबत ।

तारीख नामा

जिनको कयामत की है सक, क्यों कर उठसी एह खलक ।
बात नहीं ए बरकरार[1], काफर न देखें ए विस्तार ।।१।।
न देखें अपना हवाल[2], कई पैदा किए आदमी डाल ।
खुदा खाक पाक से पैदा किया, तिन बूंद का ए विस्तार कर दिया ।।२।।
एही तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊं सही ।
जिन सेती होवे मकसूद, इन नाबूद सेती ल्याया बूद ।।३।।
तिन में बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आवे बुध ।
इन में खुदाए किए दोए, कयामत काम दूजे से होए ।।४।।
साहेब चाहे सो करे, निपट मांहें नजर में धरे ।
ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार ।।५।।
खावंद होए के करसी काम, तिनका अव्वल से धरिया नाम ।
बाहेर ल्याया तुमारे तांईं, छिपा लड़का था पेट माहीं ।।६।।
निहायत[3] था नातवान[4], ना वर पाएगी ना काम पेहेचान ।
सब तरबियत[5] तुमको किया, पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया ।।७।।
तूं था बीच कौम जाहिल, तित खुदाए ने दई अकल ।
बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस ।।८।।
तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा[6] ।
बीच ज्वानियां आगूं ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान ।।९।।
।।प्रकरण।।२०।।चौपाई।।४६२।।

लिख्या आम सिपारे सूरत, आठईं मांहें मजकूर कयामत ।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारहीं सदी में निदान ।।१।।
दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिन में लई मिलाए ।
दस ऊपर दोए बुरज[7] जो कही, इन में हादी उमत मजकूर भई ।।२।।

१. उचित । २ हाल बड़ा । ३. बहुत ही । ४. कमजोर । ५. खुलासा - शिक्षा देना । ६. प्रतिज्ञा पालन । ७. नक्षत्र ।

दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे ।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांद की सोए ।।३।।
या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब ।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही कयामत ।।४।।
फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई ।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन ।।५।।
ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही ।
एक कौल बीच बंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया ।।६।।

।।प्रकरण।।२१।।चौपाई।।४६८।।

अमेतसालून[१]

महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज कयामत ।
पढ़्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान ।।१।।
काफर पूछें मोमिनों से ले, ना पूछे रसूल को दिल दे ।
खुदाए ताला ने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर ।।२।।
कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिन में ल्यावें सक ।
रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर ।।३।।
ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत ।
कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर[२] दिवाना कहे ।।४।।
कोई कोई कयामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें ।
एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे कयामत ।।५।।
केतेक साहेब सों बैठे फिर, केतेक कयामत से मुनकर ।
बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात ।।६।।
खुदाए की सौंह खाए के कही, के कयामत नजीक आई सही ।
पेहेली नीयत अकीदे[३] अपनी, झूठा कौल ना करे धनी ।।७।।

१. कुरान का ३०वा पाराः । २. कवि । ३. विश्वास ।

जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान ।
पहाड़ मेखां[१] कही उस्तुवार, पैदा किया दुनियां नर नार ।।८।।
तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे ।
कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे ।।९।।
रात निकोइयों[२] को भाने, कूवत हैवानी की आने ।
बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर ।।१०।।
साहेब फतुआत[३] का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे ।
इनकी नजरों न छिपे दुस्मन, जो कोई हैं साहेब के तन ।।११।।
रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम, करें परदा दुनियां सों चलें आराम ।
दिन के तांईं कह्या बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार ।।१२।।
ए जो चले रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊं बलिहार ।
कह्या जो साहेब का दिन, ओ बखत तलब करें मोमिन ।।१३।।
इनहीं में ढूंढ़ें हासिल[४], इस दिन उमत की फसल ।
इनके तले सातों आसमान, ए सारों के ऊपर जान ।।१४।।
और खलक जो इनके तले, तिन खलकों को होए जुलजुले[५] ।
पैदा किया आफताब[६] रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमिन ।।१५।।
इनों के साथ उतर्या बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल ।
तिन की पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास ।।१६।।
गेहूं जौ और कह्या घास, काफर फरिस्ते रूहें उमत खास ।
फरिस्ते जो गेहूं इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम ।।१७।।
मोती दरियाव से काढ़्या महंमद, इन बिध इत लिख्या सब्द ।
घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो उतरी दोऊ दरियाव से जान ।।१८।।
याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप लपेटे गए ।
इनों के बीच चले हुकम, रोज कयामत को जाहेर खसम ।।१९।।

१. खूंटे । २. भलाई करने वाला । ३. न्याय । ४. प्राप्ति । ५. देवी प्रकोप, भूकंप । ६. सूर्य ।

बरकरार[1] किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही कयामत ।
ए फसल परहेजगार मोमिन, काफरों के तंबीह के दिन ॥२०॥
इस रोज फूंके करनाए[2], असराफील सूर कुरान के गाए ।
एक सूरें आखिर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन ॥२१॥
सब उठे कबर थें अपनी, कायम किए कयामत के धनी ।
इमाम सालबी यों कहे बनी, रसूल पूछे उमत अपनी ॥२२॥
कहे कयामत में सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए ।
बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन ॥२३॥
सुवर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल[3] के ढिग ना गए ।
गधे सूरत कहे हरामकार, जिन के बुरे फैल रोजगार ॥२४॥
सूद खाने वाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फंदे ।
न किया सिजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहेरे पड़े दोजख मार ॥२५॥
गूंगे कहे जालिम हुकम, वे सबके तले न ले सकें दम ।
पढ़े जुबां काटे पीव लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे ॥२६॥
मलें दोजखी हाथ पांऊं दोए, ताए देखे भिस्ती अचरज होए ।
उड़न वाले कहे मोमिन, मुतकी भी पड़ोसी तिन ॥२७॥
ताए हर भांत रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन ।
चुगलखोर[4] काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलों को लगे घाउ ॥२८॥
ए दस भांत की कही दोजक, जो बे फुरमान हुए हक ।
जिनहू फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए ॥२९॥
फुरमाया केतेक फेर उठाए, तकब्बरों[5] दोजख हमेसगी पाए ।
और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी उमत साहेब के दर ॥३०॥
उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदों मिले कहे ।
जिनों इनों की दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई ॥३१॥

१. निश्चित । २. नरसिंघा । ३. उचित । ४. निंदक । ५. अभिमानी ।

और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर ।
ए जो दुनियां का कह्या आसमान, दो टुकड़े दिल कह्या जहान ॥३२॥
ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी कयामत बखत ।
बीच हवा के पहाड़ उड़ाए, ए जो दुनियां में बुजरक केहेलाए ॥३३॥
बुजरकों धोखा क्योंए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए ।
फितुए[१] इनों के जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब ॥३४॥
ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए ।
सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार ॥३५॥
अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक बखत ।
जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े ॥३६॥
भिस्त रजवान[२] मोमिन निगेहवान[३], दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान ।
तहां तांई बखत पोहोंचे सबन, पैदरपे[४] जले अगिन ॥३७॥
गुजरे हैं हद से काफर, दूर दराज जानी थी आखिर ।
दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखियों हाल इन ॥३८॥
करे मोअलिम[५] नकल अपनी जुबांए, सांची जिकर जो कही खुदाए ।
जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल ॥३९॥
साखी-दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे मांहें ।
सात हजार साल चालीस, नीके देखियो ताहें ॥४०॥
तैंतालीस जुफ्त[६] जो कहे, हर जुफ्त सत्तर बहार[७] भए ।
हर बहार सात सौ बरस लए, हर बरस तीन सौ साठ दिन दए ॥४१॥
याके एकैस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन ।
ए रसूल के आए की मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल ॥४२॥
पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे ।
त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नब्बे कम किए ॥४३॥

१. फिसाद । २. रखवाला । ३. संरक्षक । ४. निरंतर । ५. शिक्षक । ६. जोड़ा । ७. हिस्सा ।

इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर ।
अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस ॥४४॥
इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम ।
जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे ॥४५॥
तिन में जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर ।
तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखिर ॥४६॥
सत्तर बरस पुलसरात के कहे, सो उठने कयामत बीच में रहे ।
पुलसरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले[१] आखिर ॥४७॥
दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए ।
ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर ॥४८॥
॥प्रकरण॥२२॥चौपाई॥५१६॥

दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालों ने लहे ।
क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक ॥१॥
पुरसिस[२] का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे ।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे ॥२॥
ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें ।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे ॥३॥
हमेसां दोजखी बदकार[३], रोज कयामत के हुए खुआर ।
ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर ॥४॥
कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएँ किए चेतन ।
उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर ॥५॥
तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन ।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे ॥६॥

१. भूकंप और ज्वालाएं । २. हिसाब, पूछताछ । ३. दुराचारी ।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए ।
कूवत[1] तिन समें कहुंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए ।।७।।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान ।
मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएँ ।।८।।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएँ खोल्या मुसाफ मगज ।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई ।।९।।

।।प्रकरण।।२३।।चौपाई।।५२५।।

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई ।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध ।।१।।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार ।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार ।।२।।

छिपा था बुजरक बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई कयामत ।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जले बदकार ।।३।।

जिन पाई राह रोज कयामत, सो उठे फजर के नूर बखत ।
फजर पीछे जब ऊग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन ।।४।।

तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया ।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील ।।५।।

एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहीं में कायम किए ।
यों कयामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन ।।६।।

।।प्रकरण।।२४।।चौपाई।।५३१।।

प्रकरण तथा चौपाईयों का संपूर्ण संकलन
प्रकरण ५२७, चौपाई १८७५८

।। बड़ा कयामतनामा सम्पूर्ण।।

१. हिम्मत ।

कुलजम सरूप ग्रन्थ में,
जो खोजे चित लाए।
हद बेहद पर धाम लों,
आतम दृष्टि लखाए ॥१॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
जो करे नित विचार।
आतम जाग्रत होवहीं,
खुले धाम के द्वार ॥२॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
नित सेवे जो कोए।
पूरण प्रेम जो उपजे,
सत्वर दरसन होए ॥३॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
पढ़े पढ़ावे कोए।
धाम रास बृज जागनी,
मिले इंछित सुख सोए ॥४॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
जो करहीं नित पाठ।
अहनिस युगल सरूप सों,
खेले सातों घाट ॥५॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
सेवे आठों जाम।
उन सब सुन्दर साथ को,
करूं दण्डवत प्रणाम ॥६॥

श्री श्री अपार श्री श्री कुलजम सरूप गुजराती सहित हक हादी श्री प्राणनाथजी, अक्षरातीत, पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंद, श्री जी साहिबजी सतगुरूजी की अपार अनुकम्पा से, सतगुरू परमहंस महाराज श्री राम रतन दासजी एवं हादी धर्मवीर जागनीरतन पूज्यपाद सरकार श्री, ब्रह्मलीन श्री जगदीश चन्द्रजी की अपार मेहर एवं प्रेरणा से तिथि कारतक सुदी चौदश सम्वत २०६१ पोहोर दिन चढ़ते वार बृहस्पति को छप कर सम्पूर्ण तैयार हुआ ।